श्री ग्रन्थों का प्रभाव और नाम

☞ निम्नांकित ग्रन्थ ☜

(१) १२५ दिमागी रोग नाशक हैं **(२)** अखण्ड आनन्ददायक हैं **(३)** स्थाई शान्तिदायक हैं **(४)** ॐ आनन्दमय प्रभु पिता के पद दायक हैं **(५)** दिव्य गुण युक्त सदाचार दायक हैं **(६)** ब्रह्मसाक्षात्कारयुक्त आत्म ज्ञान दायक हैं और **(७)** मोक्षदायक हैं। अत: ध्यान अमृत दायक श्री ग्रन्थों को अवश्य प्राप्त करें।

श्री ग्रन्थों का नाम		पृष्ठ सं०
(१) श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ (भाग-१)	... ...	१४४
(२) श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ (भाग-२)	... ...	१६०
(३) श्री मानव भाग्य विधाता	... ...	६४
(४) श्री गुण ज्ञान सागर	... ...	६४
(५) ॐ आनन्दमय सूत्र (भाग-१)	... ...	४८
(६) ॐ आनन्दमय सूत्र (भाग-२)	... ...	४८
(७) श्री आनन्द कीर्तन (भजन संग्रह-१)	... ...	३२
(८) श्री आनन्द कीर्तन (भजन संग्रह-२)	... ...	१६
(९) श्री आनन्द कीर्तन (भजन संग्रह-३)	... ...	१६
(१०) श्री अनुभव अंक	... ...	१६
(११) सच्ची प्रेम भक्ति	... ...	१६
(१२) ज्ञानवीर दिमाग	... ...	१६
(१३) महावीर दिमाग	... ...	१६
(१४) दु:खों की खेती का त्याग	... ...	१६
(१५) ब्रह्मज्ञान -५	... ...	१६
(१६) ब्रह्मज्ञान -६ ... १६ **(१७)** सत्य विधान	... ...	१६
(१८) शत्रु विजयी ... १६ **(१९)** बन्धु आत्मा	... ...	१६
(२०) सत्संग सुधा ... १६ **(२१)** अखण्ड-विधान	...	०८

प्रकाशन में सहयोग

१. कु. प्रियंका- भोपाल **२.** श्याम लता- दिल्ली
३. बाबू राम शर्मा- भिंड **४.** धर्मेन्द्र सिंह- पु. इंस्पेक्टर-मुरादाबाद
५. श्रीमती गायत्री सिंह- इलाहाबाद **६.** श्रीमती ममता सिंह

सच्ची प्रेम भक्ति

कलह-क्रोध और चिन्ता आदि १२५ दिमागी रोग नाशक है और समता प्रसन्नता आदि १२५ दिमागी सम्पत्ति दायक है तथा ध्यान-अमृत द्वारा दिमाग को महावीर बनाने वाली है।

ॐ आनन्दमय
ॐ शान्तिमय

बालक, वृद्ध, युवा, नर-नारी,
यह प्रेम-भक्ति है सब की हितकारी।

ॐ आनन्दमय प्रभु की प्रेम-भक्ति

(श्री विश्वशान्ति भाग १ से)

हे प्रिय आत्मन् ! ॐ आनन्दमय प्रभु पिता के विधान युक्त आठ सिद्धि * दायक सद्गुण-सदाचारों को ग्रहण करने का और ॐ आनन्दमय प्रभु पिता के विधान विरुद्ध आठ असिद्धि † दायक दुर्गुण-दुराचारों को त्याग करने का नाम ॐ आनन्दमय प्रभु की प्रेम भक्ति है ।

ॐ श्री प्रभु पिता की सच्ची प्रेम भक्ति की उपासना के योग्य नाम, रूप, गुण, ज्ञान, भाव, आचरण और प्रेमी-पदार्थ यह आठ तत्त्व हैं। इन आठ तत्त्वों का ज्ञान इस ग्रन्थ में सार रूप से प्रकाशित है ।

---

* † पूर्ण आनन्द-शक्ति युक्त आठ सिद्धियों का और दुःख-अशान्ति युक्त आठ असिद्धियों का विज्ञानमय ब्रह्मज्ञान श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ (भाग-१) के पृष्ठ ६-७ पर प्रकाशित है ।

श्री प्रेम भक्ति के २१ सूत्रों को आप श्रद्धा-प्रेम पूर्वक <u>प्रातः-सायं</u> और <u>शयन</u> के समय प्रति दिन तीन बार दीर्घकाल तक पठन करें × ।

हे प्रिय आत्मन् ! बाल्यावस्था से ही आदेशदाता मालिक बनने की इच्छा कराने वाला <u>अहंकार</u> † मानव-देहधारी नारी-नरों की १२५ प्रकार की दिमागी सम्पत्तियों का और आत्मबल का विनाश करने वाला धोखेबाज वैरी-दुश्मन है अर्थात् राक्षस है । (गीता अ० ९-१२)

स्मृति रहे ! <u>अहंकार</u> १२५ दुर्गुण-दुराचारों का गुरु है । इस धोखेबाज वैरी का विनाश करने वाली, यही एकमात्र ॐ आनन्दमय प्रभु पिता की सच्ची प्रेम भक्ति है ।

× दीर्घकाल तक पठन करने का तात्पर्य यह है कि बारम्बार श्रवण-पठन करते रहने से, वही गुण अपने दिमाग में धारण होते हैं । हाँ ! जो गुण, ज्ञान, भाव, आचरण श्रद्धा-विश्वास पूर्वक अपने में स्वाभाविक धारण हो जावें, उस ज्ञान को पठन-श्रवण करने की आवश्यकता नहीं ।

†*(हम इस नौ द्वार वाले शरीर के द्वारपाल हैं मालिक नहीं ।)*

दैनिक-प्रार्थना

ॐ श्री समाधिमग्न महापुरुष देवाय नमः

पूर्णआनन्द सेवायोग युक्त
ध्यान में आठों पहर आनन्द

श्री गुरु वन्दना

नमो नमो गुरु आनन्दकन्दम्
नमो नमो गुरु शान्तिकन्दम् ।।
मायारहितं त्रिगुणातीतम्
स्थितप्रज्ञं गुरु परमानन्दम् ।।
हो कैवल्यं हो अवधूतम,
ज्ञानमूर्ति आत्मानन्दम् ।।
नित्यं, एकम्, स्वच्छं शुद्धम्
सदा उदीतं निज आनन्दम् ।।
नत मस्तकं आनन्द नमामी,
सद्गुरु तव चरणार्विन्दम ।।

प्रेमी भक्त की प्रार्थना

ॐ त्वमेव माता च पिता त्वमेव,
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव,
त्वमेव सर्वं मम देवदेव।।
कार्पण्यदोषोपहतस्वभावः
पृच्छामि त्वां धर्मसंमूढचेताः।
यच्छ्रेयःस्यान्निश्चितं ब्रूहि तन्मे
शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम्।।

(१) हे श्री विश्वपिता भगवान् ! * सम्पूर्ण विश्व में ➡ ''*'' शान्ति प्रदान करें !

(२) हे दयासिन्धु भगवान् ! * सम्पूर्ण मनुष्यों की बुद्धि को * सत्यव्यवहार में * प्रेरित करें।

भगवन् ! यह चिन्ह ➡ ''*'' वक्ता और श्रोताओं के उच्चारण की सुविधा के लिए विश्राम के रूप में समझना चाहिए ।

(३) हे पतितपावन भगवान् ! * सम्पूर्ण जीवों के * दु:ख-पापों का * नाश करें !

(४) हे श्री आनन्दमय भगवान् ! * सम्पूर्ण प्राणियों को * आनन्द प्रदान करें ।

(५) हे श्री आनन्दमय प्रभो ! * सम्पूर्ण मनुष्यों को * समता, प्रेम, * और सात्त्विक ज्ञान प्रदान करें !

(६) हे दीनदयालु भगवान् ! * सम्पूर्ण जीवों को * उपयोगी अन्न, वस्त्रादि प्रदान करें !

(७) हे श्री ज्ञानस्वरूप भगवान् ! * हमारे मन-बुद्धि को * निरहंकारी श्रद्धा-प्रेमयुक्त† सेवा-पूजा के कार्यों में * संलग्न करें ।

† **हे श्री आनन्दमय भगवान् !** श्रेष्ठता के अहंकार की रक्षा-वृद्धि करने वाले प्रेम के श्रद्धालु और इन्द्रियों के सुख को भोगने वाले प्रेम के श्रद्धावान् नारी-नर, १२५ दिमागी अग्नियों के दण्ड से उबलते रहते हैं । ‡

‡ *मैं श्री आपका आज्ञाकारी प्रिय पुत्र हूँ– ब्रह्मभूत:*

ॐ आनन्दमय प्रभु पिता का आदेश

(८) हे प्यारे प्रेमियों ! * मेरे ॐ आनन्दमय * ॐ शान्तिमय * नाम-रूप को मत भूलो, * मुझे सर्वत्र, सब रूपों में * और अपने हृदय (दिमाग) में मानो ‡ ।

‡ यही महामंत्र जाली ममता-प्रेम सहित डाकू अहंकार को विनाश करने वाला प्रभावशाली दिव्य **''बम-गोला''** है और यही योगसिद्ध महामंत्र आत्मबल वर्द्धक ध्यान अमृत का स्रोत है ।

(९) हे परम प्यारे देवी-पुरुषों ! * तुम तन धन से * विश्वशान्ति दायक * ध्यान-समाधिमग्न * गुणवानों की * उदारता पूर्वक सेवा करो !

(१०) हे प्रेमियों ! * श्रद्धा, प्रेम, विश्वास करो मैं तुम्हारा * परम हितैषी हूँ ।

(११) हे मित्रों ! ✻ आसुरी अहंता, ममता युक्त प्रेम, ✻ तथा दुःख, चिन्ता, ✻ कामना, क्रोध, ✻ ईर्ष्या, द्वेष ✻ और कलह मत करो, ✻ अपनी आठ इन्द्रियों ‡ को ✻ वश में करते रहो !

‡ **आठ इन्द्रियाँ किसका वाचक है ?–** कान, उपस्थ (ब्रह्मचर्य), नेत्र, जिह्वा, नासिक, वाणी, त्वचा और मन ।

(१२) हे प्रेमी प्यारो ! ✻ विश्वास करो ✻ मैं सुख, शान्ति ✻ और आनन्द, शक्ति प्रदान करूँगा !

(१३) हे प्रेमी भक्तों ! ✻ ध्यानयोग ✻ और सेवायोग का अभ्यास करो ✻ मैं पूर्णानन्द प्रदान करूँगा !

(१४) हे परम प्यारे देवी-पुरुषों ! ध्यान समाधिमग्न ✻ सत्य महापुरुषों का ✻ संग, सेवा, स्मरण ✻ आज्ञापालन ✻ करो और कराओ ✻ ज्ञान होगा !

प्रेमी भक्त की प्रतिज्ञा

(१५) हे ज्ञानदाता भगवान ! ✻ मेरे ज्ञान में ✻ चराचर ✻ सब कुछ श्री आप ही हैं ✻ (एक श्री आनन्दमय भगवान् ही ✻ अनेक रूपों में हैं) !

(१६) हे श्री विश्वपिता भगवान् ! ✻ मैं बुद्धि † से अपना शरीर ✻ तथा सम्पूर्ण प्रेमी-पदार्थ ✻ श्री आपके ही समझूँगा !

(१७) हे श्री आनन्दमय भगवान् ! ✻ मैं श्री आपके दिव्य नाम ✻ ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय ✻ महामंत्र को ✻ हर समय मन से मनन ✻ तथा वाणी से उच्चारण करता रहूँगा !

† **हे श्री आनन्दमय भगवान् !** बड़प्पन के अभिमान की और ममता की रक्षा-वृद्धि कराने वाली स्वार्थी बुद्धि, १२५ मानसिक अग्नियाँ प्रज्वलित करने वाली वैरिन है । (मैं गीली मिट्टी के शरीर का मालिक नहीं हूँ ।)

(१८) हे श्री गुरुदेव भगवान् ! ✻ मैं तन एवं पदार्थों से ✻ श्री आपके प्रेमियों की सेवा ✻ और आनन्द - शक्ति दायक ✻ ॐ आनन्दमय भगवान् के विधान का ✻ प्रचार करता रहूँगा !

(१९) हे समदर्शी भगवान् ! ✻ मैं लाभ-हानि, ✻ जीवन-मरण, ✻ मान - अपमान, ✻ स्तुति-निन्दा ✻ अनुकूलता-प्रतिकूलता ✻ तथा सुख-दुःखों की प्राप्ति में ✻ राग-द्वेष एवं हर्ष-शोक रहित ✻ सहनशीलता ✻ धीरता, वीरता, ✻ गम्भीरता व निर्भयता ✻ और समता, प्रसन्नता, ✻ शान्ति सन्तोष पूर्वक ✻ हर समय ✻ निरहंकारी दया-प्रेम युक्त ✻ भगवत् आनन्द में मग्न रहूँगा !

(२०) हे श्री आनन्दमय भगवान् !✻ मैं ध्यान-समाधिमग्न ✻ महापुरुषों का ✻ संग, सेवा, स्मरण, ✻ आज्ञापालन करता रहूँगा !

(२१) हे श्री न्यायकारी † भगवान् ! ✻ मैं राजसी - तामसी मनुष्यों के अनुकूल ✻ संग - सेवा ‡ का त्याग करूँगा ✻ तथा ममता - अहंकार बुद्धि से ✻ अन्न, धन, ✻ वस्त्र, भवन, ✻ जमीन आदि पदार्थों का ✻ संग्रह नहीं करूँगा । ✻ सात्त्विक पदार्थों का भोजन ✻ एवं सात्त्विक वस्त्र धारण करूँगा × ।

---

† **हे श्री न्यायकारी भगवान् !** मैं राज विधान के विरुद्ध दम्भ-पाखण्ड, झूठ-कपट, चोरी, ब्लैक, रिश्वत, सट्टा, जुआ, आदि हिंसाजनक पापमय धोखेपूर्ण तामसी कर्मों द्वारा धन उपार्जन करने का सर्वथा त्याग करूँगा ।

‡ **स्मृति रहे !** श्री महापुरुष देव की आज्ञा के अनुसार निष्काम भाव पूर्वक राजसी-तामसी मनुष्यों का संग, सेवा करना भी ध्यानयोग की मग्नतायुक्त आनन्द-शान्ति वर्द्धक होगा ।

हाथ से तैयार किया हुआ विटामिनयुक्त आटा, दाल, चावल और गुड़, चीनी, साग-सब्जी, दूध, घी, फल, मेवा तथा दीपन-पाचन कारक साधारण नमक-मसाले इत्यादि सात्त्विक भोजन हैं ।

× सफेद वस्त्र सात्त्विक, अनेक रंगों के राजसी, रेशमी और नीले-काले व मैले वस्त्र तामसी समझें । फटे हुए वस्त्रों को सीकर तथा हिंसा रहित रेशमी वस्त्र भी धारण कर सकते हैं ।

(क) सकल पदार्थ हैं जग माहीं।
श्री प्रभु मर्यादा हीन नर पावत नाहीं।।
(ख) आठ पदार्थ अन्दर माहीं।
ध्यान हीन नर पावत नाहीं।।
(ग) संयम, सेवा, स्मरण सादगी।
ध्यान - योगी का ध्यान।।
(घ) पाँचों से अति शीघ्र हो।
आनन्द पद का ज्ञान।।

ॐ श्री आनन्दमय भगवान् की जय !
ॐ श्री महापुरुष भगवान् की जय !!
ॐ श्री सतगुरू देव भगवान् की जय !!!

उपसंहार

ॐ आनन्दमय प्रभु पिता की प्रेम-भक्ति में प्रकाशित गुण, ज्ञान, भाव, आचरण भगवत् विधानयुक्त सात्त्विक हैं । अतः इन २१ सूत्रों को नियत समय पर श्रद्धा-प्रेम पूर्वक निष्काम भावों की जागृति के उद्देश्य से और अपने गुप्तचर वैरी अहंकार का विनाश करने की इच्छा से प्रातः - सायं और शयन के समय प्रति-दिन तीन बार उच्चारण कर, तद्नुसार आचरण करने का अभ्यास करें ।

श्री योगसिद्ध वैदिक सनातन महामंत्र ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय को हर समय प्रत्येक कार्य करते हुए मन से मनन तथा वाणी से उच्चारण करने का अभ्यास करें ।

प्रातः सायं नेत्र बन्द करके सर्वगुण सम्पन्न इष्ट भगवान् के विग्रह की मानसिक सामग्रियों द्वारा मानसिक पूजा करते हुए मन को एकाग्र (ध्यान) करें । चित्त निरोध का यह अनुभव

पूर्ण सुगम साधन है। ध्यान-अमृत पान करने के लोभी होना है * ।

---

* श्री भगवान् के स्वरूप पर मन लगाने की विधि श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ (भाग १ और २) में प्रकाशित है ।

प्रश्न– रात-दिन के २४ घन्टों में ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय भगवान् के स्वरूप विग्रह को याद करते हुए आसन पर बैठकर, कितने घन्टे ध्यान करें ?

☞ **हे प्रिय आत्मन् !** जैसे-जैसे श्री प्रेम भक्ति के आदेश और प्रतिज्ञानुसार ॐ आनन्दमय प्रभु पिता के आज्ञाकारी बनने के लोभी होते जाएँगे वैसे-वैसे ही ॐ श्री दयामय-प्रेममय जी अधिक अवकाश और बैठने की सामर्थ्य प्रदान करेंगे ।

ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय महामंत्र का जप करते हुए अर्थ स्वरूप आनन्द-शान्ति युक्त प्रकाशपुंज की भावना से आकाशवत् ॐ आनन्दमय प्रभु पिता के निराकार स्वरूप का स्मरण-ध्यान भी कर सकते हैं परन्तु आकाशवत्

निराकार प्रभु का चिन्तन करना सब के लिए अति कठिन है और श्री साकार विग्रह को याद करना सब के लिए सुगम है । फल दोनों का एक है । समाधान के लिए वैधानिक ब्रह्मज्ञान श्री गीता अध्याय १२ श्लोक १ से ५ तक पढ़ें ।

प्रिय बन्धु ! हृदय को प्रेममय बनाना है । अतः मन को अवलम्बन देने के लिए किसी चेतन स्वरूप की आवश्यकता है । यदि स्वरूप विषयक उपरोक्त विधि में आपका संशय हो तो ''मन की एकाग्रता का ज्ञान'' नामक लेख पठन करें जो श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ (भाग १) में प्रकाशित है । तद्नुसार जो श्री स्वरूप आपको प्रिय हो उसको अपना इष्ट मान कर साधना करना प्रारम्भ करें। ध्यानयोग के अभ्यास से अलौकिक आनन्द शान्तियुक्त-शक्ति का अनुभव कर कुछ ही दिनों में आपके समस्त संशय-भ्रम शान्त हो जाएँगे ।

ॐ आनन्दमय प्रभु पिता की प्रेम भक्ति का विस्तृत ज्ञान श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ (भाग १ पृष्ठ १४४) के 'श्री मानसिक चिकित्सा' और 'श्री ब्रह्मज्ञान' नामक लेखों में प्रकाशित है। उनका दैनिक पाठ करने का विधान है ।

हे प्रिय आत्मन् ! उपरोक्त विधान को भंग करने वाले नारी-नर, काम, क्रोध, चिन्ता, भय और नाराज़गी आदि १२५ दिमागी अग्नियों की ज्वाला से दुःखी-अशान्त रहेंगे।

सच्चे धर्म का और सच्चे पाप का ज्ञान

हे प्रिय आत्मन् ! निरहंकारी प्रेम अमृतमय धर्म का गुरु है और अहंकारी प्रेम पापमय कर्मों का गुरु है ।

स्मृति रहे ! निरहंकारी प्रेम की दो कक्षाएँ हैं ।

☞ १- परमार्थी प्रेम २- आत्म प्रेम ।

यह पूज्य - पूजक प्रेम श्री सिद्ध - साधकों का है । इस सात्त्विक प्रेम को धारण करने का ब्रह्मज्ञान श्री गीता अ० ९/१३, ६/२९-३० आदि सैकड़ों श्लोकों में प्रकाशित है ।

हे प्रिय आत्मन् ! अहंकारी प्रेम की तीन कक्षाएँ हैं ।

☞ १- मोहिनी प्रेम २- आसुरी प्रेम ३- राक्षसी प्रेम (गीता अध्याय ९ श्लोक १२) ।

स्मृति रहे ! ध्यान अमृत के त्यागी दम्भी गुरु-शिष्यों सहित समस्त नारी-नरों का प्रेम, श्री गीता अ० ९/१२ में और राजसी, तामसी, आसुरी नामक कई श्लोकों में प्रकाशित है ।

लड़ाकु पशु-पक्षी आदि जीव भी इसी प्रेम के भोक्ता हैं । यह प्रेम रुदन युक्त कलह-क्लेशों की वृद्धि करने वाला है ।

हे प्रिय आत्मन् ! दण्ड और पद के दाता ॐ आनन्दमय प्रभु पिता जी की ओर से, मानव देहधारी नारी-नरों को निरहंकारी प्रेम विद्या के विद्वान बनने की अथवा अहंकारी प्रेम विद्या के विद्वान बनने की स्वतंत्रता दी हुई है । ''यथेच्छसि तथा कुरु'' (१८/६३) । परन्तु

स्मृति रहे ! श्री गीता अध्याय १२/४ से २० तक प्रकाशित निरहंकारी प्रेम के बल द्वारा आदेशदाता मालिक बनना अथवा पूजनीय मान्यवर प्रसिद्ध होना समता-प्रसन्नतादायक सच्चा धर्म है । और

श्री गीता अ० १६/४ से २० तक प्रकाशित अहंकारी प्रेम के बल द्वारा आदेशदाता मालिक बन कर अपने आज्ञाकारी बनाना अथवा पूजनीय मान्यवर प्रसिद्ध होना पश्चाताप दायक पाप कर्म है । यही सच्चे पाप कर्म हैं । अस्तु,

भगवन् ! श्री गीता ग्रन्थ का बलशाली युवराज कौन है ?

☞ ध्यान अमृत पान करानेवाला श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ ।

श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ १२५ प्रकार की दिव्य सम्पत्ति प्रदान करने वाला है । और १२५ प्रकार के दिमागी रोग नाशक है । श्री विश्वशान्ति ग्रन्थ में सच्चा धर्म प्रकाशित है ।

ॐ शान्तिमय

श्री ग्रन्थ परिचय

१- ध्यानमग्न महात्मा की वाणी-लेखनी का ज्ञान, ध्यान-अमृत पान कराने वाला है और ब्रह्मपद युक्त दिव्य आनन्द-शान्ति का दाता है । तथा

२- आदेशदाता बनने के कामी नारी-नरों का ज्ञान, वैरी-दुश्मनों का निर्माता है और चिन्ता-क्रोध युक्त दुःख-अशान्ति का दाता है (मोघज्ञानाः) ।

(श्री गीता अ० ९/१२-१३)।

दिमागी लाभ-हानि दायक, दोनों विधान श्री गीता अध्याय ९/१२-१३ में प्रकाशित है ।

मूल्य-सेवा

☞ आप अपना अहोभाग्य समझकर, श्री ग्रन्थ को स्वीकार करें और अपने हितार्थ चन्दे के रूप में अर्थ प्रदान करें।

प्रकाशकः **श्री विश्व शान्ति आश्रम**
त्रिवेणी पुरम, झूँसी, इलाहाबाद ।

मुख्य-शाखाः श्री विश्व शान्ति आश्रम (रजि०) जी.ए. १/१३, त्रिवेणी पुरम, पो०- झूँसी, इलाहाबाद (उ.प्र.) । पिन– २११०१९

उप-शाखाः श्री विश्व शान्ति आश्रम (रजि०) ३४ बी, शंकर घाट मार्ग, तेलियरगंज, इलाहाबाद (उ.प्र.) । पिन– २११००४

योगसिद्ध महामंत्र का प्रभाव

श्री समाधिमग्न महापुरुषों के आनन्द-सम्पन्न हृदय कमल से प्रकट हुए, योग-सिद्ध वैदिक सनातन, ब्रह्मवाची महावाक्य ''ॐ आनन्दमय ॐ शान्तिमय'' महामंत्र को प्रत्येक कार्य करते हुए घड़ीयंत्रवत् हर समय जपें ।

इस परम प्रभावशाली राजमंत्र को उच्चारण करते रहने से विविध प्रकार के विघ्नकारक दिमागी दोष नष्ट होते रहते हैं और ध्यानयोग, सेवायोग के प्रभाव से अशान्ति दायक दुःखों का नाश होकर आनन्द-शान्ति युक्त शक्ति-मुक्ति की प्राप्ति होती है। स्मृति रहे ! बाजारू मंत्रों की रटन से आपको ध्यान-अमृत पान नहीं करायेंगे। हाँ ! इस ग्रन्थ में प्रकाशित विधान को धारण करना अनिवार्य है ।

बालक, वृद्ध, युवा, नर-नारी ।
इस मंत्र के हैं सभी अधिकारी ।।